मुरली शब्दकोष

हिन्दी मुरली में आये हिन्दी] अंग्रेजी] अरबी-फारसी भाषा व मुहावरों-कहावतों का सरलीकृत अर्थ हिन्दी भाषा में सम्पादक की कलम से.....

शब्दकोष के विभिन्न भागों में मुरलियों में आने वाले कठिन शब्दों का अर्थ सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है। कठिन शब्द को कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती। देशकाल] भाषा की समझ] ज्ञान -स्तर में भिन्नता होने के कारण हर किसी के लिए कठिन और सरल शब्द का मापदण्ड अलग अलग हो सकता है।अतएव शब्दों के चुनाव में सामान्यीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। अन्यथा हम अज्ञानता व भ्रमवश शब्दों के अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। आज हिन्दी भाषा की प्रकृति और स्वरूप में निश्चय ही समय के साथ भूमंडलीकरण के दौर में बदलाव आया है। इसलिये वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुरलियों के अर्थ व भाव को अच्छे से समझने के लिए मुरली में आये कठिन शब्दों के भावार्थ जानना आवश्यक हो जाता है। हिन्दी मुरली की दिशा में यह प्रयास आपके लिए उपयोगी साबित हो ऐसा सम्पादक मंडल आशा करता है।

क्रम सं.	शब्द	अर्थ
1	**सिकीलधे**	मूल शब्द सिक से बना जिसका अर्थ अत्यन्त प्रिय, लाडले, जिस तरह लौकिक माता-पिता को बहुत प्रतीक्षा के उपरान्त पुत्ररत्न प्राप्ति पर बच्चे से बहुत सि सिक (Love) होना (अतिस्नेह) होती है।उसी तरह परमात्मा को भी जब 5000 वर्षोंपरान्त बच्चों से संगम पर मिलन होता है, तो बच्चों से बहुत सिक. सिक होती है। (सिन्धी शब्द पर मूलतः फारसी भाषा का शब्द)
2	**16 कला सम्पन्न**	मानव स्वभाव/व्यवहार की सर्वश्रेष्ठ कला (100% सर्वगुण सम्पन्न)
3	**अंगद के समान**	अचल अडिग/कैसी भी परिस्थिति में स्थिर रहना
4	**अकर्ता**	कर्म के खाते से दूर/निर्लिप्त/निर्बंधन
5	**अकर्म**	जिस कर्म का खाता ही न बने अर्थात् सत्कर्म के खाते का क्षीण होना (देवत का कर्म इसी कोटि में आता है।)
6	**अकालमूर्त**	जिसका काल भी न कुछ बिगाड़ सके/अमर/मृत्युंजय स्वरूप
7	**अकालमूर्त**	जिसको काल ना खा सके/नित्य/अविनाशी
8	**अखुट**	कभी न समाप्त होने वाला लगातार अनवरत
9	**अचल-अडोल**	जो न डिगनेवाला हो और न हिले अर्थात् हमेशा स्थिर रहे।
10	**अजपाजप**	लगातार जाप करना वह जप जिसके मूल मंत्र हंसः का उच्चारण श्वास. प्रश्वास
11	**अजामिल**	पुराण के अनुसार एक पापी ब्राह्मण का नाम जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेकर तर गया
12	**अनन्य**	एकनिष्ठ/ एक ही में लीन हो
13	**अनादि**	जिसका न कोई आदि/आरम्भ हो, न अन्त हो
14	**अन्तर्मुखता**	आत्मिक स्थिति में रहनाःभीतर की ओर उन्मुख/आंतरिक ध्यानयुक्त।

15	**अन्तर्मुखी**	शान्त/जो शिव बाबा की याद में अन्तर्मुखी स्वभाव वाला हो जाये
16	**अन्तर्यामी**	मन के ज्ञाता/सबकुछ जानने वाला
17	**अभूल**	भूल न करने वाला
18	**अमल**	आचरण, व्यवहार, कार्यवाही
19	**अमानत**	एक निश्चित समय के लिए कोई चीज़ किसी के पास रखना
20	**अलबेलापन**	आलस्य (पांच विकारों पर भी भारी पड़ने वाला विकार)
21	**अलबेलापन**	गैर जिम्मेदाराना व्यवहार/कर्मआलस्य
22	**अलाएँ**	खाद, विकार
23	**अलाव**	स्वीकार करना/ज्ञान देना
24	**अलौकिक**	जो इस लोक से परे का व्यवहार करे
25	**अल्लफ**	एक परमात्मा
26	**अविद्याभव**	अज्ञानता के कारण भूल जाना
27	**अविनाशी बृहस्पति**	अविनाशी राज्यभाग (ब्रह्मा के साथ)
28	**अव्यक्त सम्पूर्ण**	सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा
29	**अशरीरी**	शरीर में रहते हुए शरीर से अलग डिटैच/भिन्न/बिना
30	**अष्टरत्न**	सबसे आगे का नम्बर/पास विद् आनर केवल आठ आत्माएं/आठ की माला इन
31	**असल**	सही मायने में/सच/वास्तव में
32	**अहम् ब्रह्मस्मि**	मैं ही ब्रह्म हूं
33	**आत्मभिमानी**	देह में रहते अपने को आत्मा रूप में स्थिर रहना या अनुभव करना
34	**आत्माए अडोमेसल रहती**	परमधाम में ऊपर परमात्मा के नीचे नम्बरवार आत्माएं अण्डे की तरह/सरीखे रहती है।
35	**आथत**	धैर्य, धीरज
36	**आदम-ईव**	सृष्टि के शुरू में आने वाले प्रथम नर.नारी (हिन्दू धर्म में मनु-श्रद्धा)
37	**आदमशुमारी**	बहुतायत/अति/जनगणना भी एक अर्थ में

38	**आप ही पूज्य आपे पुजारी**	स्वयं की (अपने देव स्वरूप की) स्वयं ही पूजा करने वाली देव वंशावली की आत्माएं जो द्वापर से अपनी ही पूजा शुरू कर देती हैं।
39	**आपघात**	आत्महत्या
40	**आपे ही तरस परोई**	देवताओं की बड़ाई और अपनी बुराई की भक्ति का गायन
41	**आशिक**	प्रेम करनेवाला मनुष्य या भक्त, चित्त से चाहने वाला मनुष्य-आत्मा
42	**आहिस्ते आहिस्ते**	धीरे धीरे
43	**इत्तला देना**	जानकारी देना
44	**उजाई माला**	बुझी हुई माला
45	**उतरती कला**	उत्तरोत्तर या सतयुग से धीर धीरे 16 कलाओं में ह्रास/कमी आना
46	**उपराम**	राम के समीप/न्यारापन निरन्तर योगयुक्त रहकर चित्त को सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से न्यारा हो जाना ही उपराम होना है। इस सृष्टि में अपने को मेहमान समझने से उपराम अवस्था आएगी।
47	**उल्हना**	लाहना, शिकायत, किसी को भूल या अपराध को उससे दुःखपूर्वक जताना, किसी से उसकी ऐसी भूल चूक के विषय में कहना सुनाना जिससे कुछ दुःख पहँचा हो।
48	**ऊँ शान्ति**	मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ
49	**ऋद्धि-सिद्धि**	गणेश की पूजा याद विधिवत की जाए, तो इनकी पतिव्रता पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि भी प्रसन्न हो कर घर-परिवार में सुख-शान्ति और संतान को निर्मल विद्या बद्धि देती है। ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती है।
50	**एक ओंकार**	परम शक्ति एक ही है
51	**एकानामी**	एक शिव परमात्मा के अलावा किसी की याद ना रहे, मन-बुद्धि में एक शिव ही याद रहे
52	**एशलम**	जहाँ दुःखी व अशान्त आत्माओं को शरण मिलती है।
53	**ओम्**	मैं आत्मा
54	**कखपन**	बुराई/अवगुण
55	**कच्छ-मच्छ**	परमात्मा के अवतारों के पौराणिक नाम यथार्थ. मत्स्यावतार, कच्छ,वराह
56	**कट**	विकार
57	**कब्रदाखिल**	अकाले अवसान/मृत्यु/समाप्ति

58	**कयामत**	कुरान के अनुसार कयामत के दिन भगवान मुर्दों में भी जान फूंक देंगे। कयामत के दिन ना बाप-बेटा, भाई-बहन का इस दुनिया की कीमती से कीमती चीज और ना ही किसी की सफारिश तब किसी इन्सान के काम आएगी। केवल अच्छे आमालों और इस्लाम के स्तंभों और सुन्नत तरीकों से जिंदगी गुजारने वाले इंसानों को ही जन्नत में भंजा जाएगा। पाप बढ़ जाएंगे, अधिकाधिक भूकंप आएंगे, औरतों की तादाद में मर्द ज्यादा होंगे
59	**करनकरावनहार**	सब कुछ करने कराने वाला परमात्मा
60	**करनीघोर**	जिन्हें मुर्दे की बची चीजें दी जाती हैं।
61	**कर्म**	शारीरिक अंगों द्वारा किया गया कोई भी कार्य
62	**कर्मभोग**	विकर्मों का खाता जिसे भोगना पड़ता है या योगबल से मिटाया जा सकता है।
63	**कर्मातीत**	कर्म के बन्धन से दूर/जीवन-मुक्त आत्मा/कलियुग अन्त तक 9 लाख आत्माएं अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ से कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करेंगी।
64	**कलंगीधर**	कलंक को धारण करना
65	**कलश**	गगरा, घागर, घड़ा।
66	**कल्प**	5000 वर्ष का एक चक्र का नाटक/ड्रामा
67	**कल्प-कल्पान्तर**	हर कल्प में (सतयुग से संगमयुग तक)
68	**कवच**	बख्तर/युद्ध में छाती की रक्षा के लिये उपयोगी आवरण
69	**कशिश**	आकर्षण, खिंचाव, झुकाव, रुझान।
70	**कागविष्ठा**	बहुत थोड़ा/कौए की लीद जैसा गन्दा
71	**काम कटारी**	काम विकार में जाना
72	**कामधेनु**	एक गाय जो पुराणानुसार समुद्र के मंथन सक निकली थी। पर चौदह रत्नों में से एक है, इससे जो मांगो वही मिलता है।
73	**कुख वंशावली**	गर्भ से जन्म (लौकिक)
74	**कुम्भीपाक नर्क**	पुराणों में वर्णित एक घोर नर्क
75	**कृष्णपुरी**	सतयुग में श्रीकृष्ण का राज्य
76	**कौड़ी मिसल**	कौड़ियों के मोल/मूल्यहीन

77	**कौरव**	दुःख देने वाले मनुष्य, 'जो ईश्वरीय नियम मर्यादाओं को न मानते है और न उनकी श्रीमत पर चलते है, कौरव कहलाते है!' भारत में कौरव वंशियों का महाविनाश के समय आपस में गृहयुद्ध होगा।
78	**खग्गे/कन्धे उछालना**	खुशी में रहना
79	**खलास**	खत्म/समाप्त
80	**खाद**	विकारों का लेप हो/युक्त हो
81	**खिदमतगार**	सेवाधारी
82	**खिव्वैया**	नाव को खेने वाला परमात्मा हमारी ज़िन्दगी रूपी नैया की पतवार को चला कलियुगी दुनिया से पार ले जाने वाला
83	**खिव्वैया**	तारणहार/नैया पार लगाने वाला
84	**खुदाई खिदमतगार**	ईश्वर की खिदमत या सेवा करनेवाला।
85	**खैराफत**	कुशल क्षेम/ राजीखुशी/ भलाई
86	**खोट**	दोष, अशुद्धि, किसी कार्य या व्यक्ति के प्रति मन में होने वाली बुरी भावना।
87	**ख्यानत**	अमानत या धरोहर के रूप में रखी वस्तु को हड़प लेना या चुरा लेना, बुरी नीयत से किसी दूसरे की संपत्ति का गबन कर लेना बेईमानी या भ्रष्टाचार,
88	**ख्यालात**	विचार या भाव आदि
89	**गफलत**	असावधानी
90	**गरीब-निवाज़**	गरीबों का रहनुमा/मददगार शिव परमात्मा
91	**गर्भ जेल**	गर्भ जेल में रहते कर्म बन्धन के हिसाब किताब चूकतू करना
92	**गांवड़े**	गाँव का
93	**गुरूमत**	प्रसिद्ध गुरूओं के मत पर आधारित
94	**गुलशन**	बगीचा
95	**गृहचारी**	गृहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली बुरी अवस्था/ दुर्भाग्य
96	**गोपीवल्लभ**	महाभारत में वर्णित गोप-गोपियों के अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण जिनकी मुरली की धुन सुनने के लिये अपनी सुधि बुधि खोकर काम काज छोड़कर चले आते थे। वास्तव में हम बच्चे ही वही गोप.गोपियां हैं, जो नित उस परमप्रिय शिवबाबा अर्थात् गोपीबल्लभ को याद किये और मुरली सुने बिना नहीं रह सकती हैं।
97	**गोया**	मानो/अर्थात्
98	**गोरखधंधा**	गड़बड़, गड़बड़ी करनेवाला, घपलेबाजी, गोलमाल करना, अनियमितता।

99	**गोसाईं**	श्रेष्ठ, मालिक, शिव परमात्मा, स्वामी।
100	**ग्रहचारी**	कुंडली में बुरे ग्रह बैठ जाना
101	**ग्रहण**	स्वीकार करना,धारण,पहनना।
102	**चन्द्र वंशी**	त्रेतायुगी देवी देवता
103	**चात्रक**	जिज्ञासु बने रहना, हमेशा तैयार जिस प्रकार चात्रक व पपीहा पक्षी स्वाति नक्षत्र की बूंद की चाहना करता हुआ उसके इंतजार में आसमान में अपनी आंखे टिकाऐ रखता है, उसी प्रकार बच्चे बाबा की मुरली को जिज्ञासु बन कर इंतजार करते रहते है कि बाबा मुरली में क्या कहने वाला है।
104	**चैतन्य लाइट हाउस**	जैसे स्थूल लाइट हाउस सभी जहाजों को रास्ता बताता है, वैसे ही ब्राह्मण बच चैतन्य रूप में अपने ज्ञान योग की आत्मिक लाइट से सभी को सही रास्ता बताते हैं।
105	**चों चों का मुरब्बा**	किस चीज से बना ये पहचानना मुश्किल/सब कुछ मिक्स
106	**छि-छि-पलीती**	गन्दा (नये जन्में शिशु के कपड़ों जैसा)
107	**जड़जड़ीभूत होना**	खोखला होना
108	**जानीजाननहार**	सर्वज्ञ/सबकुछ जानने वाला
109	**जिन्न जैसी बुद्धि**	अथक परिश्रमी (जिन्न का अर्थ भूत)
110	**जिस्मानी यात्रा**	शारीरिक यात्रा
111	**जुत्ती**	शरीर
112	**जूं मिसल**	धीरे धीरे लगातार
113	**ज्ञान की कंठी**	ज्ञान की माला/प्राप्ति
114	**ज्योत ज्योत समाना**	भक्तिमार्ग में कहते है आत्मा ज्योति मृत्यु के बाद परमात्मा ज्योति में विलीन हो जाती है
115	**झांझ**	एक वाद्ययंत्र/संगीत निकालने वाला स्थान
116	**झाड़**	मनुष्य सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष, जिसमें बताया गया है पुरी सृष्टि पर आत्माओं का फैलाओ कैसे हुआ, सारे धर्म कैसे फैले, उनकी समय समय पर गति कैसी रही। उसके बारे में स्पष्ट दिया हुआ है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ के रूप में।
117	**टाल-टालियाँ**	सभी धर्मों की विभिन्न शाखायें
118	**टिंडन**	बिच्छू-टिंडन जैसे जहरीले जीव

119	**टिक टिक**	घड़ी जैसे निरतर टिक टिक कर चलती रहती वैसे यह ड्रामा भी सेकड बाय सेकंड लगातार चलता रहता है।
120	**टीवार्ट**	तिराहा/तीन रास्ते
121	**टेव**	आदत
122	**डबल सिरताज**	स्वर्ग में डबल सिरताज होते देवी देवता, एक लाइट अर्थात पवित्रता का ताज और दूसरा रतन जड़ित ताज
123	**डोडा**	जवारी, ज्वारे/बाजरी कि रोटी
124	**तकदीर**	भाग्य/प्रारब्ध/किस्मत
125	**तकदीर को लकीर लगाना**	भाग्य बनाने का सुअवसर खो देना
126	**ततत्वम्**	तुम भी वही हो अर्थात आत्मा परमात्मा का रूप है।
127	**तत्ते तवे**	गर्म तवे
128	**तत्त्वज्ञानी**	जीवन/संसार के सार या मूल को जाननेवाला
129	**तदबीर**	अभीष्ट सिद्धि करने का साधन/उक्ति/तरकीब/यत्न।
130	**तमोगुण**	गुणों में सबसे निम्न स्तर (चार कला सम्पन्न कलियुग से/भारत मे अरबों के आक्रमण से शुरू)
131	**ताउसी तख्त**	राज्य-भाग
132	**तिजरी की कथा**	भक्ति मार्ग की सत्य नारायण की काल्पनिक कथा के मध्य में सुनाई जाने वाली कथा
133	**त्रिलोकीनाथ**	तीनों लोकों का मालिक शिव परमात्मा
134	**दग्ध करो**	खत्म करो
135	**दिलरूबा**	वह जिसमें प्रेम किया जाए/प्यारा
136	**दिव्य चक्षु**	ज्ञान का तीसरा नेत्र
137	**दुम**	पूंछ, आत्मा के निकलते ही शरीर रुपी दुम छूट जायेगा
138	**दुस्तर**	जिसे पार करना कठिन हो/ विकट/कठिन
139	**देवाला**	जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो/ जो सर्वथा अभाव की स्थिति में हो
140	**देही**	देह को चलाने वाली/मालिक/आत्मा

141	**दो ताजधारी**	संगमयुगी ब्राह्मण का और सतयुगी देवता दोनों के आभामंडल की लाइट का ताज धारण करना
142	**दोज़ख**	नरक
143	**धणी**	मालिक
144	**धरिया**	धुरण्डी (होली के अगले दिन का एक त्यौहार)
145	**नंदीगण**	बैल की प्रतिकृति जो शिवमन्दिर में होती है कलियुग अन्त में शिव बाबा जिन दो रथों/तन (ब्रह्मा बाबा व गुलजार दादी) का सहारा लेते हैं, यही नन्दीगण के प्रतीक
146	**नट शैल**	सार रूप (सारांश)
147	**नब्ज देखना**	जांच करना, सूक्ष्म चेकिंग करनी
148	**नम्बरवार**	कोई होशियार कोई बुद्धू/क्रमोत्तर गिरती हुई स्थिति में होना।
149	**नष्टोमोहा**	पुरानी दुनिया से मोह ममत्व का त्याग, निर्मोही स्थिति
150	**नामाचार**	प्रसिद्ध/लोक विश्रुत
151	**नामी-ग्रामी**	प्रसिद्ध करने वाला
152	**निधनके**	जिसके माँ-बाप न हो
153	**निराकार सो साकार**	साकार मे कर्म करते हुए अपने निराकार स्वरूप (stage) की स्मृति/याद में रह
154	**निर्माण चित्त**	जिसका मन निर्मल/साफ हो/निर्माण करने का जिसमें हृदय हो
155	**निर्लेप**	जिस पर विकारों का लेप ना लगा हो/निर्विकारी स्थिति स्टेज
156	**निर्लेप**	कर्म बन्धन से मुक्त
157	**निर्वाणधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान/ब्रह्मलोक, मूलवतन भी कहते हैं
158	**निर्विकारी**	विकार (बुराइयों) रहित (रजो, तमो से सम्बन्धित)
159	**निवृत्ति मार्ग**	सांसारिक विषयों का किया जानेवाला त्याग, प्रवित्ति का अभाव होना, सांसारिक कार्यों के लगाव से परे
160	**नूँथ होना**	माला में पिरोया हुआ
161	**नूँध**	पहले से लिखा हुआ
162	**नेष्टा**	एक जगह शान्ति में बैठकर योग का अभ्यास कराना। वैसे नेष्ठा एक प्रकार की योग की अत्यन्त कठिन क्रिया है। नेष्ठ नेत्र और देहातीत बनाने वाली शक्तिशाली दृष्टि है।

163	**नैन चैन**	आंख की हलचल व व्यवहार द्वारा
164	**नौंधा (नवधा भक्ति)**	भक्तिमार्ग में भक्त ईश्वर का साक्षात्कार के लिये नौ प्रकार की भक्ति श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, संख्य, दास्य और
165	**न्यारा और प्यारा**	सबसे न्यारा/अलग होते हुए भी सबका प्यारा होना
166	**पक्का महावीर**	विजयी, सफल, दृढ़, सफलतामूर्त
167	**पत्थरनाथ**	माया/विकारों के वशीभूत
168	**पत्थरपुरी**	कलियुगी/दिलोदिमाग पत्थर सदृश (पत्थर पूजे हरि मिले, तो.....)
169	**पथ प्रदर्शक**	पैगम्बर/रास्ता दिखाने वाला/गाइड
170	**पदमापदम, पदमगुणा**	गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील) जो इस प्रकार लिखी जाती हैं—१००,००,००,००,००,००,००० (**१ नील - सौ अरब।)** संगम पर किया हुआ पुराषार्थ पदमापदम/पदमगुणा फलदाई होता है।
171	**पद्मपति जज**	अखुट सम्पत्ति (ज्ञान/योग/धन) का स्वामी
172	**परमधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
173	**परिस्तान**	फरिश्तों की दुनिया/सतयुगी दुनिया
174	**पवित्रता**	मन-वचन-कर्म से पावन, निश्छलता, स्वछता, चतुराई रहित, सरल, साफ, शुभ वृत्ति, शुभ विचार कामना या इच्छा रहित, निस्वार्थ
175	**पसारा**	विस्तार से
176	**पाण्डव**	जिनको ईश्वरीय नियम वा मर्यादाओं पर सम्पुर्ण निश्चय है और ईश्वरीय पार्ट को पहचान कर ईश्वरिय ज्ञान को जीवन मे धारण करते है वही सच्चे पांडव कहलाते है, परमात्मा भी इनके साथी बनते हैं।
177	**पारलौकिक**	इस साकारी लोक या दुनिया से पार/बहुत दूर/सूक्ष्मलोक से भी ऊपर/दुनियावी रिश्तों से परे
178	**पारसनाथ**	परमात्मा/पारस सदृश बनाने वाला
179	**पारसपुरी**	स्वर्ग/सतयुग दिलोदिमाग जहाँ पारस पत्थर जैसा हो
180	**पित्र खिलाना**	परम्परा से चली आ रही भारतीय रस्म जिसमें लोग मृत व्यक्ति की आत्मा क ब्राह्मणों के शरीर में आह्वान कर पितरों की इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है ।
181	**पुरूषार्थ**	कर्म, वह मुख्य उद्देश्य या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना आवश्यक और कर्त्तव्य हो।

182	**पैगाम**	सन्देश
183	**पोतामेल**	हिसाब-किताब, रोजनिशी
184	**पोतामेल**	आत्मा जो मन वाणी कर्म द्वारा कार्य करे उसके रोज का हिसाब-किताब
185	**प्रकृति**	स्वभाव, तासीर, कुदरत।
186	**प्रजापिता**	सभी आत्माओं के पिता
187	**प्रवृत्ति**	झुकाव, संसार के कार्यों से लगाव, भौतिक जीवन के क्रियाकलापों (activity) में आसक्ति, मुरली के सन्दर्भ में गृहस्थ व्यवहार में रहकर श्रीमत की युक्ति (तरकीब) से निर्विकारी बनकर परमात्मा से योगयुक्त होना।
188	**प्रवृत्ति मार्ग**	संसार के कामों में लगाव, दुनिया के धंधे में लीन होना, भौतिक जीवन के कार्यव्यापारों में आसक्ति, जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों और बंधनों में पड़ा रहकर दिन बिताता है।
189	**प्रारब्ध/प्रालब्ध**	तीन प्रकार के कर्मो में से वह जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो। भाग्य, किस्मत, जैसे-जो प्रारब्ध में होगा वही मिलेगा।
190	**प्लानिंग बुद्धि**	लक्ष्य पर सोचती बुद्धि
191	**प्लेन बुद्धि**	साफ बुद्धि
192	**फखुर/फक्र**	नशा/गर्व
193	**फज़ीलत**	मैनर्स, सभ्यता, श्रेष्ठता
194	**फथकाती**	तड़पाती, परेशान करती है
195	**फरमान बरदार**	आज्ञाकारी होना
196	**फराक दिल**	रहमदिल/साफ-शुद्ध चित्त वाला
197	**फराखदिल**	बड़ा दिल
198	**फानन**	अचानक/तुरन्त
199	**फारगति देना**	छोड़ के जाना/भाग जाना/तलाक देना
200	**फिकरात**	चिंता, सोच, खटका, ध्यान देने योग्य
201	**फुरना**	निकलना, प्रकट होना, चमक उठना
202	**फुरी फुरी अलाव भरता**	बूंद-बूंद से तालाब भरता है।
203	**फौरन**	तुरन्त, फटाफट

204	**बख्तावर**	भाग्यवान, खुशनसीब।
205	**बचड़ेवाल**	पालन करनेवाला, सम्भाल या देखभाल करने वाला।
206	**बनियन ट्री/बनेन ट्री**	प्राचीन वटवृक्ष जिसकी जड़ का पता नहीं (कोलकाता के बोटेनिक गार्डन में है) आदि सनातन देवी देवता धर्म के संस्थापक परमपिता परमात्मा शिव दोनों लोप हो जाते है।
207	**बलिहार जाना**	न्यौछावर/समर्पित/कुर्बान कर देना
208	**बल्लभ**	पृथ्वी के राजा के अर्थ में/इसका एक अर्थ प्रिय भी/ दुनियावी रिश्तों से पार
209	**बहिश्त**	स्वर्ग/सतयुग त्रेतायुग
210	**बांधेलियां**	बन्धन युक्त आत्मायें,वो आतमाएं जो परिवार के बन्धन में रहते बाबा मिलन नहीं कर सकती परन्तु बाबा को बहुत प्रेम से याद करती हैं
211	**बादशाही**	सतयुग की आठ गर्दिश, अष्टरत्न
212	**बाह्र्यामी**	बाहरी/दुनियादारी का अनुभवी
213	**बाला**	प्रसिद्ध करना
214	**बीज**	जैसे एक वृक्ष का मूल उसका बीज होता है अर्थात बीज में ही वृक्ष का जीवन होता है उसका विस्तार होता है, ठीक इसी प्रकार परमात्मा भी इस सृष्टि रूपी वृक्ष के चैतन्य बीज हैं जो अपनी शक्तियों के बल से पतित सृष्टि को पावन बना कर उसमें नव जीवन का संचार करते है।
215	**बृहस्पति की दशा**	श्रीमत का पालन करते हुए ज्ञान योग की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते रहनेवाले। जिसकी वजह से माया वार नहीं कर पाती तो वे सदा सुखी रहते।
216	**बेअन्त**	अनादि/अन्तहीन/जिसका अन्त न हो
217	**बेगर**	अकिंचन/भिक्षुक/दरिद्र
218	**बेगर**	भिक्षुक/ दरिद्र
219	**बेगर टू प्रिन्स**	विकारों के कारण भिखारी बनी हुई आत्माओं को ज्ञान व योग द्वारा शिव बा राजकुमार अर्थात् धनवान, राज्य-अधिकारी बनाते हैं।
220	**बेहद**	इस मायावी/ सांसारिक दुनिया के हद/सीमा से पार/असीम
221	**बेहद का बाप**	प्रजापिता/ बापदादा/ सीमा से परे हो
222	**बेहद का बाप**	पारलौकिक पिता, शिव परमात्मा
223	**बैकुण्ठनाथ**	स्वर्ग (सतयुग-त्रेतायुग) के मालिक/राजा

224	**ब्रह्मचारी**	ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य दो शब्दो **ब्रह्म** और **चर्य** से बना है। ब्रह्म का अर्थ परमधाम, चर्य का अर्थ विचरना, अर्थात परमधाम मे विचरनाए सदा उसी का ध्यान करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। वास्तव में ब्रह्मचर्य काम विकार से सम्पूर्ण मुक्ति। पवित्रता का आधार स्तंभ ब्रह्मचर्य।
225	**ब्रह्मज्ञानी**	ब्रह्म-तत्त्व को जाननेवाला
226	**भंडारा**	खाने-पीने की वस्तुओं का संग्रह स्थल
227	**भंभोर**	गोल दुनिया
228	**भगवानुवाच**	शिव परमात्मा के महावाक्य/विशेषतः मुरली पूरी तरह भगवानुवाच ही है
229	**भट्ठी**	जिसमें तपकर सोने में निखार आये/आबू जैसी पावन तपस्याभूमि में जाकर वरिष्ठों की क्लास आदि का श्रवण-चिन्तन-मनन से ब्राह्मणत्व में सुधार लान
230	**भस्मासुर**	एक असुर जो किसी को या स्वयं को भी भस्म कर सकता है
231	**भागंती**	सब कुछ सुनकर फिर छोड़ने वाला
232	**भागीरथी**	भाग्यशाली रथ ब्रह्मा का/भगीरथ की तपस्या के समान भारी/बहुत बड़ा।
233	**भासना आना**	अनुभव होना
234	**भ्रमरी मिसल**	भ्रमरी की तरह दीपक में भूं भूं करना
235	**मंथन**	मथना, खूब डूब-डूबकर तत्वों का पता लगाना।
236	**मंथन**	खूब डूब डूब कर विचारकर तथ्यों का पता लगाना।
237	**मच्छरों सदृश वापस जाना**	अन्त समय एक साथ अनेक आत्माएं मच्छरों के समान परमधाम जायेंगी।
238	**मत-पंथ**	गुरूओं के बताये मत व उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलना
239	**मदार**	आधार, धुरी, दायरा
240	**मदार**	धुरी, आधार
241	**मध्याजी भव**	स्वर्ग के सम्पूर्ण रूप, विष्णु का स्वरूप को याद करो।
242	**मनमनाभव**	स्वयं को आत्मा समझ एक बाप परमपिता शिव को याद करना
243	**मनसा**	मन की शक्ति से/मनसा सेवा
244	**मनोनुकूल**	इच्छानुसार
245	**मन्मत्/मनमत्**	स्वयं के तर्क/विवेक बुद्धि पर आधारित विचार

246	**ममत्त्व रखना**	मोहमाया/अपनेपन के भाव में रहना
247	**मर्तबा**	पद/पोजीशन
248	**मलेच्छ**	पापी/भ्रष्टाचारी
249	**महतत्व**	वह स्थान जहां आत्मा व परमात्मा का निवास है/ब्रह्मलोक
250	**माटेले**	जो माँ को पसन्द हो/सगा, जो सौतेला न हो
251	**मामेकम्**	सिर्फ मुझ एक बाप परमपिता परमात्मा शिव को याद करो
252	**माया**	5 विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार) बाबा के ज्ञान से परे इसका अर्थ धन सम्पत्ति के अर्थ में रूढ़ था।
253	**माया**	काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी पांच विकार/भक्ति मार्ग में धन-संपत्ति
254	**मायाजीत जगतजीत**	माया पर विजय पाने वाले को जगत की बादशाही मिलेगी
255	**माशूक**	परमात्मा प्रियतम
256	**माशूक**	वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रियतम, परमात्मा
257	**मासी का घर**	जहां आसानी से आया जाया जा सके
258	**मास्टर ज्ञान सूर्य**	ज्ञान.सूर्य (शिव बाबा) का शिष्य/ बेटा/स्वरूप
259	**मिडगेट**	छोटा बच्चा, ज्ञान में कम समय से हो, उसे मिडगेट कहते है।
260	**मिस न करना**	कभी न छोड़ना
261	**मिसाल**	नमूना, उदाहरण, तुलना
262	**मिसाल-राज्य**	राज्य का नमूना/उदाहरण
263	**मुंझना**	समझ में न आना
264	**मुआफिक**	ठीक ठीक, न ज्यादा न कम, मनोनुकूल, इच्छानुसार
265	**मुक्तिदाता**	सर्वदुःखों से मुक्ति/आजादी दिलानेवाले, शिव बाबा
266	**मुख वंशावली**	ब्रह्मा मुख से जन्म (अलौकिक)
267	**मुजीब**	स्वीकार करने वाला, जवाब देने वाला।
268	**मुरब्बी बच्चा**	आज्ञाकारी/पसंदीदा/समान
269	**मुरादी**	मृत्यु, पोतामेल, अभिलाषी
270	**मुरीद**	जो किसी का अनुकरण करता या उसके आज्ञानुसार चलता हो/ अनुगामी/अनुयायी/शिष्य
271	**मुलम्मे**	कमतर/निम्न बर्तन की गन्दगी करने से संबंधित
272	**मूलवतन**	परमधाम/सर्व आत्माओं का मूल घर/आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
273	**मूसल**	मिसाइल्स/अणुबम/प्रक्षेपकास्त्र जैसे अन्य विध्वंशकारी अस्त्र-शस्त्र

274	**मूसलाधार**	लगातार/बिना रूके (संकर शब्द)
275	**मृगतृष्णा/मरीचिका**	जो दिखाई तो देता हो पर वास्तव में होता ही नहीं (कभी कभी मैदानों में भी कड़ी धूप पड़ने के समय जल या जल की लहरों की मिथ्या प्रतीति होती है जि मृग जल समझकर तृष्णा बुझाने के लिये भटकता है)
276	**मेहर करना**	मेहरबानी, कृपा, अनुग्रह, दया
277	**मैं पन**	देह अभिमान
278	**मोचरखाना**	मार/सजाये खाना
279	**मोचरा**	सजायें
280	**मोहताज**	मोह के ताजधारी/माया के वशीभूत
281	**मौलाना मस्ती**	भगवान की याद में मस्त
282	**म्लेच्छ बुद्धि**	विकारी बुद्धि
283	**यादव**	जिन्होंने खुद के कुल का विनाश स्वयं (बॉम्ब, मिसाईल) बनाकर करगें। युरो आदि पश्चिम देश विज्ञान की शक्ति द्वारा परमाणु अस्त्र शस्त्रों द्वारा अपने ही मानव कुल का विनाश करेगें। विशेष मुरली से - शास्त्रों में दिखाते हैं- लड़ाई में यादव कौरव मारे गये। पाण्डव 5 थे। फिर हिमालय पर जाकर गल मरे। अर्थात 5% आत्माएँ तपस्या द्वारा शरीर के भान को समाप्त कर स्वर्ग अर्थात सतयुग में जाने की अधिकारी बनती हैं।
284	**युग**	सृष्टिचक्र का एक चतुर्थांश/1250 वर्ष
285	**युगल**	जोड़ा/दम्पत्ति/पति-पत्नी में से कोई एक भी
286	**रजोगुण**	राजसिक/उपरोक्त दो युगों से कम गुण विशेषकर द्वापर से जहां ईर्ष्या-द्वेष रूपी रज/धूल प्रारम्भ होती हैं।
287	**रडिया मारना**	चीखना-चिल्लाना
288	**रमता जोगी**	एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे-रमता जोगी, बहता पानी इनका कहीं ठिकाना नहीं।
289	**रस**	प्राप्ति का सार/मजा/आनन्द
290	**रसम, रस्म**	परम्परा, रिवाज
291	**रसातल**	बुराई की अति

292	**राजयोग**	परमात्मा को याद करने की सर्वोच्च सहज विधि, जिसमें आंखें खोलकर अपने को आत्मा समझकर परमात्मा के ज्योति स्वरूप का ध्यान किया जाता है।
293	**राजाई**	बादशाही, (विशेषकर सतयुग व त्रेतायुग में राज्य प्राप्त करने के सन्दर्भ में)
294	**रायल घराना**	राजाई घराना/सतयुगी देवी देवता परिवार
295	**राहु की दशा**	श्रीमत का उल्लंघन कर ज्ञान योग की पढ़ाई में फेल होने वाले जसकी वजह माया का वार होता रहता है जिसकी वजह से हमेशा दुखी रहते।
296	**रिंचक मात्र**	बहुत थोड़ा
297	**रूद्र-ज्ञान यज्ञ**	शिवबाबा ने स्वयं ज्ञान देकर जिस यज्ञ की स्थापना की हो
298	**रूद्रमाला**	शिव की माला जिसमें 08,108,16108 की माला सम्मिलित है
299	**रूप बसंत कहानी का मर्म**	जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे, तब तुम पुरानी याददाश्त जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारो में इमर्ज रहेंगे।
300	**रूस्तम**	शूरवीर, माया से विजय पा रहे बच्चों को बाबा यह उपाधि/टाइटिल देता है।
301	**रूहरिहान**	आत्मा की आत्मा से/आत्मा की परमात्मा के साथ बातचीत
302	**रूहानियत**	आत्मिक स्थिति/स्वभाव में स्थिर रहना
303	**रूहानी लीला**	आत्माओं की लीला
304	**रेजगारी**	छोटे सिक्के
305	**रौरव नरक**	नरक की अति/पुराणों में एक भीषण नरक का नाम जो २१ नरकों में से पाँचवाँ कहा गया है।
306	**लकब**	उपाधि/ खिताब/ पदवी
307	**लड़ाई वालों का**	कोई सैनिक का उदाहरण
308	**लवलीन**	प्यार में मस्त
309	**लेप-छेप**	कर्मों का खाता
310	**लोन लेकर**	किराये पर
311	**लौकिक**	दुनियावी/सांसारिक रिश्ते/सम्बन्ध
312	**वरसी**	किसी के मरने के बाद हर वर्ष पड़ने वाली तिथि/ मृत का वार्षिक श्राद्ध

313	**वर्सा**	शिवबाबा से मिलने वाले ज्ञानयोग के बल से सतयुग में प्राप्त होने वाली राज अर्थात् राज्याधिकार/परमात्मा/बड़ो से सम्पत्ति का स्वतः बच्चों/ छोटों को मिलना
314	**वानप्रस्थ अवस्था**	शास्त्रों में गृहस्थ अवस्था के बाद की अवस्था जिसमें पति पत्नी घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी पुत्रों को देकर वन में साथ साथ चले जाते हैं। वहां पवित्र रह कर तपस्या करते हैं। शिव बाबा ब्रह्मा तन का आधार वानप्रस्थ अवस्था में लेते हैं- बाबा के ज्ञान में आने वाला व पवित्रता की धारणा करने से चाहे किसी भी उम्र का हो उसकी वानप्रस्थ अवस्था शुरू हो जाती है।
315	**वाममार्ग**	जब से देवताओं ने विकर्म करना शुरू किया तब से वाममार्ग शुरू हुआ
316	**वारिस**	वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और उस ऋण आदि का देनदार हो, उत्तराधिकारी जैसे बेटा अपने पिता की संपत्ति का वारिस होता है।
317	**विकर्म**	जिस कर्म से भविष्य में दुःख का खाता बढें
318	**विकर्माजीत**	काम, क्रोध आदि विकर्मों से दूर/शून्य
319	**विचार सागर मंथन**	अच्छी रीति सोचना समझना
320	**विचार सागर मंथन**	ज्ञान का गहराई से मनन .चिन्तन करना, ज्ञान के सारतत्त्व का मथकर पता लगाना
321	**विदेही**	बिना देह के शरीर से बिल्कुल अलग, शरीर से न्यारा
322	**विदेही बाप**	अशरीरी बाप/शिव परमात्मा
323	**विनाश काले प्रीतबुद्धि**	पांडव
324	**विनाश काले विपरीत बुद्धि**	अन्त समय दुर्बुद्धि का आना/ अन्त समय भगवान को भूलना/कौरव
325	**विष्णुपुरी**	विष्णु का निवास स्थान (सूक्ष्मलोक)
326	**वृक्षपति**	शिवबाबा, सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष का बीज (मूल) परमात्मा होने के कारण उसे वृक्षपति कहा जाता है
327	**वैजयन्ती**	पताका, झण्डा, विजयमाला, ज्ञान में अष्टरत्न आत्माओं की माला।

328	**वैतरणी नदी**	एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है। यह नदी बहुत तेज बहती है, इसका जल बहूत ही गरम और बदबूदार है और उसमें हड्डियॉ, लहु और बाल आदि भरे हुए है। यह भी माना जाना है कि प्राणी को मरने पर पहले यह नदी पार करनी पड़ती, जिसमें उसे बहुत कष्ट होता है। परंतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था में गोदान किया हो, तो वह आसानी से इस नदी के पार उतर जाता है।
329	**वैराग्य**	जब मन संसार के आकर्षणों से हट जाता है। संसार की विषयवासना तुच्छ प्रतीत होती है और लोग संसार की झंझटे छोड़कर एकान्त में रहते और ईश्वर का भजन करते हैं।
330	**व्यक्त ब्राह्मण**	शरीरधारी ब्रह्मा और ब्राह्मण
331	**व्यर्थ**	जो फायदेमंद नहीं हो/अनावश्यक
332	**शंख ध्वनि**	ज्ञान सुनाना
333	**शक्ति फर्स्ट**	माताओं को आगे रखना
334	**शफा पाना**	फायदा/भला होना
335	**शमा**	अग्नि/शिव बाबा को शमा कहा है और हम आत्माएं 'शमा' पर फिदा 'परवाने'
336	**शांतिधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
337	**शान्ति का घमंड**	शान्ति/साइलेन्स की शक्ति
338	**शास्त्रमत**	वेद, पुराण, उपनिषद आदि शास्त्रों पर आधारित मत
339	**शिरोमणि**	सर्वश्रेष्ठ/मुख्य/चोटी
340	**शिरोमणि**	सर्वश्रेष्ठ, भक्तों में नारद और मीरा को भक्तशिरोमणि व ज्ञान में सरस्वती क शिरोमणि कहा गया है।
341	**शिवपुरी**	शिव परमात्मा का निवास स्थान (परमधाम में सबसे ऊपर)
342	**शिवोहम्**	मै ही शिव हूं
343	**शुरूड़**	तीक्ष्ण बुद्धि/प्रखर
344	**शूबीरस**	स्वर्ग का एक पेय/अमृत
345	**शैल**	माना सारांश.... यानी शार्ट /सार रूप
346	**शो करना**	प्रदर्शन करना/ नाम बढ़ाना

347	**शो करना/बाजी**	दिखावा/नाम मान शान के पीछे चलना/प्रसिद्धि के लिए प्रयासरत (संकर/मिश्रित शब्द)
348	**श्रीमत**	शिव परमात्मा के द्वारा उच्चारित मत/विचार
349	**संकल्प**	विचार, किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ दृढ़ निश्चय (रिज़ोल्यूशन),
350	**सचखण्ड**	सतयुग
351	**सचखण्ड**	स्वर्ग/सतयुग
352	**सतोगुण**	अच्छे गुणधारी, विशेष रूप से सतयुग फिर 14 कला सम्पन्न त्रेतायुग तक की यह स्थिति।
353	**सत्कर्म**	वह पुरुषार्थी कर्म जो भविष्य/आगे के लिये सुरक्षित हो
354	**सत्यं शिवम् सुन्दरम्**	जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है। सुंदरता का तात्पर्य किसी दैहिक या प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं है। वह तो क्षणभंगुर है। सुंदरता वास्तव में पवित्र मन, कल्याणकारी आचार और सुखमय व्यवहार है। इस सुंदरता का चिरंतन स्रोत शिव ही है। शिव शब्द का अर्थ है कल्याणकारी। जो कल्याणकारी है, वही सुंदर है और जो सुंदर है वही सत्य है। इस प्रकार सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्, जैसे मंत्र का बीज शिव ही है अर्थात इस सृष्टि की कल्याणकारी शक्ति
355	**सदृश**	समान
356	**सब स्टेशन**	शान्ति प्राप्त कर आगे भेजने वाला
357	**सब्ज**	ताजे हरे भरे फल फूल
358	**समजानी**	समझाना, राय देना, समझदारी/समझ
359	**समर्थ**	फायदेमंद/सम्पन्न
360	**समर्थी**	सम्पन्नता
361	**सम्पूर्ण ब्रम्हा**	सूक्ष्म शरीरधारी वतनवासी ब्रह्मा/साकार में कर्मातीत ब्रह्मा

362	**सम्पूर्ण सरस्वती**	सूक्ष्म शरीरधारी/वतनवासी सरस्वती
363	**सर्वोदय लीडर**	सब पर दया करने वाला
364	**साकारपुरी**	मनुष्यलोक (जिसमें सभी ग्रह-नक्षत्र और जीवधारी, जड़-चेतन आते हैं)
365	**साकारी सो अलंकारी**	देवता (शरीर में रहते सर्वगुण धारी)
366	**साक्षी होना**	गवाह, दृष्टा, देखनेवाला, आत्मा की बुद्धि रूपी आँख से मन के विचार या किस घटना को देखनेवाला, मन के विचारों के दृष्टा को साक्षी कहते है। जब हम निर्विचारक बन अपने विचार को देखते हैं तब हम साक्षी होते हैं, जब हम सि
367	**सालिग्राम**	आत्माएं/जल के बहाव से नदी-समुद्र में सबसे चिकना सुन्दर पत्थर जो हिन्दू धर्म में पूज्य
368	**सालिग्राम**	शिव लिंग के साथ जो छोटे छोटे शिवलिंग आकर के पत्थर होते हैं। जो हम
369	**सिजरा**	फूलों का गुलदस्ता
370	**सितम**	अनर्थ/ आफत/जल्म/अत्याचार
371	**सिरताज**	बाबा के सिर के ताज/आज्ञाकारी
372	**सीरत**	स्वभाव, आदत
373	**सुखधाम**	स्वर्ग/सतयुग
374	**सुबह का साई**	जो सुबह मिलता हो अर्थात् ईश्वर/शिव बाबा
375	**सूक्ष्म**	बहुत छोटा, पतला या बारीकएजो अपनी बारीकी के कारण सबके ध्यान या
376	**सूक्ष्म-वतन/लोक**	स्थूल या साकारी लोक और मूलवतन या परमधाम के बीच का वह स्थान जह
377	**सूर्यवंशी**	सतयुगी देवी देवता
378	**सोमरस**	देवताओं का अमृत
379	**सौगात**	ह वस्तु जो इष्ट जनों को देने के लिये लाई जाय, भेंट, उपहार, तोहफा।
380	**स्थूल**	बड़े आकार का, जो सूक्ष्म न हो अर्थात् जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्पष्ट दिखाई य
381	**स्वचिन्तन**	स्वयं का आध्यात्मिक मनन. चिन्तन/आत्मा की समझ
382	**स्वदर्शन चक्र**	अपने सारे चक्र के 84 जन्म के पार्ट को जानने/देखने वाले कैसे एक देह छोड़

383	**स्वदर्शन चक्रधारी**	स्वयं को आत्मा समझते हुए सृष्टि चक्र और 84 जन्मों को स्मृति/याद में रह
384	**स्वमान**	स्वयं ही स्वयं को सम्मान देना
385	**हठयोग**	हठ करके योग लगा जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन
386	**हथेली पर बहिश्त**	हथेली पर/हाथ में स्वर्ग की बादशाही
387	**हद का पेपर**	स्वयं या ब्राह्मण परिवार द्वारा पेपर
388	**हद का बाप**	लौकिक पिता
389	**हप**	कोई वस्तु मुँह में चट से लेकर होंठ बंद करना जैसे—हप से खा गया।
390	**हम सो, सो हम**	भक्ति मार्ग में आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। पर ज्ञान मार्ग में शिव बाबा ने समझाया यह अर्थ बिल्कुल गलत है। हम सो का सही अर्थ है ह देवता, क्षत्रिय, वैश्य सो शूद्र। अभी हम सो ब्राह्मण बने हैं सो फिर से देवता बनने के लिये।
391	**हमजिन्स**	बन्धु, मित्र
392	**हाज़िर**	संमुख, उपस्थित, सामने आया हुआ, मौजूद, विद्यमान।
393	**हुजूर, हजूर**	बहुत बड़े लोगों के प्रति संबोधन का शब्द, मुरली में शिव परमात्मा के लिये
394	**हुज्जत**	व्यर्थ का तर्क, फजूल की दलील, तकरार, कहासुनी।
395	**हुण्डी**	इसके द्वार लेनदेन का व्यवहार
396	**होवनहार**	सम्भावित/भविष्य में होने वाला
402		